

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)

बुलेटिन संख्या-६८

दिनांक-मंगलवार, १८ सितम्बर, २०१८



टेलीफोन - ०६२७४-२४०२६६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेदशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३४.६ एवं २५.६ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८३ सुबह में एवं दोपहर में ६२ प्रतिशत, हवा की औसत गति ३.१ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ५.३ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ८.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २६.६ एवं दोपहर में ३४.३ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

● **मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान**

(१६ से २२ सितम्बर, २०१८)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १६ से २२ सितम्बर, २०१८ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अच्छी वर्षा की संभावना नहीं है, अधिकतर स्थानों पर मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है। हलाकि, २१ सितम्बर के बाद कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३५ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान २५ से २७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन ७ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ८० से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५० से ५५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

● **समसामयिक सुझाव**

- शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान भाई धान की फसल में जीवन रक्षक सिंचाई करें। सब्जियों की फसल में निकाई-गुराई व आवश्यकतानुसार सिंचाई प्राथमिकता से करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो दुग्धावस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों प्रारंभ में धान की कोमल पत्तियों तथा तनों का रस चूसते हैं जिससे पत्तियाँ पीली होकर कमजोर हो जाती है तथा पौधों की बढ़वार बाधित हो जाती है और वे छोटे रह जाते हैं। जब पौधों में वाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुंचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक-एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते हैं। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल १० प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर १०-१५ किलोग्राम की दर से भूरकाव ८ बजे सुबह से पहले अथवा ५ बजे शाम के बाद बालियों पर करें। खतों के आस-पास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव अवश्य करें।
- बरसात के दिनों में परती खेतों एवं खेतों के मेड़ पर अत्यधिक दुब, मोथा, घास वाली जंगल उग आते हैं, जिसमें कीट-व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते हैं। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस-पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधों की शाखाओं को खाकर अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दवा ग्लाइफोसेट ४१ % एस०एल० का १०-१५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर कड़ी धूप के वक्त छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए साफ पानी का प्रयोग करें। छिड़काव के बाद छिड़काव वाले यंत्र की सफाई अवश्य कर लें। इस दवा को किसी भी खड़ी फसल में छिड़काव कदापि नहीं करें।
- मिर्च, बैंगन, टमाटर वाली सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते हैं जिससे पौधों के पत्ते टेढ़े-मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते हैं। यह बड़ी तेजी से एक-पौधों से दुसरे पौधों में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- लत्तीदार वाली सब्जियों की फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करें। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरदरे का रूप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा-मेढ़ा, कभी-कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते हैं। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदकर दुसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नहीं रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इकूठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करें। अधिक क्षति होने पर १ किलोग्राम छोआ एवं २ लीटर मैलाथियान ५० ई०सी० तरल दवा को ८०० से १००० लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रूप से छिड़काव करें।
- मिर्च की फसल में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे, तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं में बरसात के अन्त में यकृत कृमि (लिवर फ्लुक) एवं एम्फीस्टोम का संक्रमण खासकर नदी, तालाब या बाढ़ के पानी से संक्रमित चारा खाने से बहुत अधिक होता है। इससे बचाव के लिए ऑक्सीक्लोजानाईड एवं लिबामिजोल १०० मि०ली० खाली पेट पशुओं को अवश्य पिलायें।

आज का अधिकतम तापमान: ३४.८ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से २.४ डिग्री अधिक

आज का न्यूनतम तापमान: २५.२ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य के बराबर

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी